



॥ इति विजयेन्द्र अच्छाद्य ॥

॥ शार्दूल्याप्यमस्तु ॥



शिगणेवायेनमः ॥ उपात्वं करितां समरण ॥ उंडै जन्मसंसान बंधन ॥ प्रका
र्ण अभाइन ॥ जोयनि रसु निदे हवुधि ॥ १ ॥ उपाविटै कतां लिलाक
निरसलत्तक लोहममतां ॥ निरदेशि पद्य हाता ॥ अपान करि
तालि वायावि ॥ २ ॥ जोविश्ववीजो चेस्तालये ॥ जोहिना विधितनयाच्या
पवभविये ॥ जोनिविकान आज आव ॥ ३ ॥ जोसच्चितां द्वान द्वाचनत
तत्त्वाग्नि च तुरवला ॥ युकथा आणी कवितां ॥ अवया
कर्ता ॥ जगन्नाथ (उच्चार) ४ ॥ मिरातिनवास्याठनिनाथा ॥
उठेबोले हनिविजययथा ॥ उसिजाहुतलिलान्समर्थी ॥ उविबोलर
साळ ॥ ५ ॥ मिंकेवकमतीमंदप्याळासि ॥ मजहुलिगंथकनवीसि ॥ जी
कचसाहित्यपुरवीसि ॥ तस्त्वनसि यंथचेढा ॥ ६ ॥ माघेसप्तमाच्याया
आती ॥ गाहुयायगोलि गिसांगती ॥ हवाजावतार विलिङ्गारिती ॥

The Bhavade or Shodhal Mandal, Dhule and
Chandrapur, Maharashtra, India

विलिगतिजाद्भुत ॥४॥ ऊपलिलिकावर्णीलिप्तगवतें ॥ रस्यनवोटं
 अपिकातें ॥ तेदशावतारीचनित्रेजाद्भुतें ॥ गोपिनेसंगीतलोयशाद्वपं ॥
 ॥५॥ म्हृणतीयशाद्वसुंदरि ॥ वहुनवाडिकरितमुरानि ॥ याचिगाहु
 रीतावक्षी ॥ देषहीभगञ्जाठाणा ॥६॥ गोपिन्हयातियशाद्वस्ती
 संकठचतुष्ठि ॥ गोयावं लयावति ॥ निष्वयेन्सीज
 नन्द ॥७॥ गोयादेंइलुउदमरु मानीजामुचंवचनप्रमान ॥
 येशोहम्हृणजावस्थकरिन् ॥ सं... तुष्ठिक्रितज्ञातां ॥८॥ गजवद
 गासीम्हृणयेशाह ॥ तुयादेंइमास्तियामुकुंवा ॥ संकठचतुष्ठिसर्वे
 ॥९॥ नस्तोडिमींकहाजाण ॥१०॥ वचनटकुनश्रीत्वस्त्रानाथ ॥ स
 येंकरावयागयाचातं ॥ रवोडिनाहिकेल्याजानंते ॥ येकमासपरि
 येतपैं ॥११॥ येशोहम्हृणञ्जालीप्रचिती ॥ धन्यधन्येदवगणाती ॥



The Rukwade Ganeshcharan Mandal, Bhule and the Kashwan Chauhan
Joint Project for Manuscript Digitization

तेस्वं विजाली चतुर्थी ॥ संकठं हृति सर्वोच्चं ॥ १४ ॥ ईदिराबंधु चंडदेय
जायं ॥ तां वरिये शाहा उपवा निराहं ॥ उजासा मात्री लवला हं ॥ क
रमायनि द्वेषहा ॥ १५ ॥ यो नथार लंडुय कवित ॥ शक्ति रामी श्रिति के
लसुरस ॥ निद्वलाडु के लविश ॥ आणी मादक बहुवस्त्रों ॥ १६ ॥
आत्माने वधाचाक नने हारा ॥ माता नं उत्तरेवी देहारा ॥ तां दयें जा
करा ॥ पडलाअं बनि ॥ १७ ॥ माता निम्हूणं हषीके
गडुभज कं धिदेसी ॥ माता हरा जबदनानि ॥ नवदहारन
देसन ॥ १८ ॥ आणी किं घुप दिपसासुं गी ॥ माताओ युगली बोहनि ॥
देवहानि याजवली श्रीहरि ॥ येकलाचि उझां होतां ॥ १९ ॥ येकातदेवा
तवं ग ॥ हवध्या हारा उपलीला ॥ नवदहान्या होकला ॥ ह्यण
वं नलागतां ॥ २० ॥ मैन्यक करण सर्वग्रास ॥ उगाप बेसलां जग

The Bhawade Sanskrut Mandal, Dhule and the
Bhawade Sanskrut Mandal, Mumbai
Pratisarpan Number: १३
Digitized by srujanika@gmail.com

देवा ॥ श्रीवैकुण्ठुरिविलास ॥ लिङ्गाभकासद्वित ॥ २१ ॥ द्वुपदिपेघेउन
 नित ॥ माताभालिसदनात् ॥ तेनिताचिदेविलाहसरोत्थं ॥ देवहनिया
 निपडिलासं ॥ २२ ॥ विस्मयांमानसीवाटलां ॥ मगम्हणेरघननिवा ॥
 नेवयभावघाकायेंजाला ॥ हातापडिलानिवाकां ॥ २३ ॥ श्रीटद्व्याम्हण
 सद्यमानियांवचनात् ॥ चक्षुहस्तउद्दियेथं ॥ भालहातंजातां
 सातेयेकधोर्लमुत्रक ॥ यावरेवेसलासंविनायेक ॥ जोडें
 नेलांडुसकालिक ॥ येकायंकिष्टां ॥ २४ ॥ संवागीचचिलासंदुर
 सोडहातविभयंकर ॥ उद्दर्योचस्यामुर ॥ देवेनयानक्ष्यालामि
 २५ ॥ बोबडिवठलिवहनी ॥ नबोलवंमास्यनीजननी ॥ सुधालागलि
 अजलारुनि ॥ लाडेइसत्तुर ॥ २६ ॥ जननिबोलंक्राधायमान ॥ उध
 उनहांवितुसंवहन ॥ जगन्निवानरकनितदृन ॥ दिनवक्ककननियां ॥ २७ ॥



लाङु होते बहुत ॥ कैसे माती लमसि यासुन वातां ॥ वीच अन्न नीनि छित
मग मंज सीहा करि ॥ २९ ॥ गणे चागला लाङु घेउन ॥ मज वरि भाले
है व्यहरण ॥ माता भुया वहन उघेडान ॥ दावि मज मुकुदा ॥ ३० ॥
हरि महण मान लकामाते ॥ उघाङुन दावि तो वहन राते ॥ माते पुढ़े कुट
नाथे लुत्पपन रन दावि ले ॥ ३१ ॥ ग्राम उड़े खीलं भंडुर्या ॥ वे
ताव अदि करन ॥ अरा दिन ती गज वहन ॥ जननी
तटस्त ॥ ३२ ॥ दर स्थामु वहन र गज वहन ॥ माते सीमहण
भेक वधन ॥ हादव दिन र लन रात ॥ उझ उद रिपावतरलं
अ ॥ ३३ ॥ अरा भुलमन्ता हिदव ॥ यादव छाते चंडे वयव ॥ एरी ब्रह्मान
क शव ॥ मज नानी जननीये ॥ ३४ ॥ येशा हजाली न समाधिरहे
अहूं छन्ती विरालि न समरन ॥ आप आपण वीन्परन ॥ लिका आङु न देवनि ॥ ३५

Rajawade Se Shochan Varanasi, Dhule and the Jashwantrao Chavhan
Collection of Manuscripts, Mumbai

३८ घुडन सवात्परहे ॥ वाल्लस्या पुढरडताहे ॥ म्हणेलाहु देजननी
मं ॥ सुधाबहुतलगली ॥ ३८ ॥ सातासद्गदितहुउन ॥ हन्त्याकडिय
घेतलाउचलुन ॥ हरिसन्तांगातेंघेउन ॥ कनिसाजनयद्राहे ॥ ३९ ॥
येकहाबलिसद्गचकयाणी ॥ नवेलतस्यान्तांगाणी ॥ हन्त्याम्तकि
ब्रायलवदनीवातली ॥ ३१ ॥ बलिरामव्यपनषिकनी ॥
गतांसातेपरात्मि ॥ हन्त्याम्तकि नषिवगली ॥ मंदिनातत्र
वेचाला ॥ ३५ ॥ मगर्स्युजननीय
मगर्स्युटिघेउनवगली ॥ ३६ ॥ रोपातली ॥ ४० ॥ हन्त्याम्त
बोलेंद्वागउन ॥ म्हणेलुनवदावीरेउघुन ॥ तोम्यासीतजगजिव
न ॥ दिनवदनकनितक्षु ॥ ४१ ॥ जननीमानिलम्हणउन ॥ वनिहु
स्वकनिजगजिवन ॥ सातवछीनम्येउन ॥ लेटकचसोगताहुजपासी ॥ ४२

Digitized by Samskruti Mission, Bhuj and the Kacchi
Garavani Library, Jamnagar, India
Digitized by Samskruti Mission, Bhuj and the Kacchi
Garavani Library, Jamnagar, India

यावेमनीचाकावष्टुणी ॥ किंमजलुवांकरावंताडन ॥ पोहेजननीसाइर्पवह
र ॥ केसीम्बतिकाकरहिलि ॥४३॥ उत्तरवहुसिनपत्तदिल ॥ तेब्रांसाडनं
उग्गिदूरविल ॥ हुपुणीब्रह्माटेसकछलानवेक्षविल ॥ येक्षादेनेनिज
मनी ॥४४॥ ज्ञानसायेकेदिनिकमळाद्वागपिता ॥ स्फटिकमुभीसिरव
छतां ॥ लिङ्गाहवीलितेज्ञातां ॥ स्फटिकमुभीकहु ॥४५॥ स्फट
तत्त्वतीविंव ॥ घननीक्षु ॥ स्फटिकमुभीकहु ॥४६॥ स्फट
वंवयंभ ॥ ज्ञातनसीमहुणेनिज
म ॥ मजकादुनदेंदृते ॥ ताहात्पानबालंमातां ॥ तेंर
यहरिकाढितां ॥ अन्त्यज्ञकतांजगप्तीता ॥ लोछणीतथंघातलि ॥४७
गडवडाल्लोछघरणी ॥ महुणेतत्त्वतीविंवदकाढनी ॥ नानाव्रकारसमजा
जननी ॥ परिरुडतांनराह ॥४८॥ दिघलिबहुतनवक्षणी ॥ परिर
गणी ॥ घातलापलयिवातनउनी ॥ परिकहापिन्नह ॥४९॥

जनिभास्त्रतास्मीनीभासुर ॥ ता॒ लङ्का॑ वावीचार ॥ मग्न्हये
वज्जनोजकि॒ शोर ॥ यो॒ रहै॒ इनमीभातां ॥ हृ॒ ४ ॥ गदै॒ गदा॑ हौस्त्रा॑
घा॑ ॥ कै॒ ना॑ थोरै॒ हौस्त्रा॑ मिलै॒ गोविदा॑ ॥ ज्ञेतै॒ बोलै॒ मुन्धा॑ ॥ न्यै॒ नै॒ यथा॑
रै॒ धन्यै॒ लै॑ ॥ हृ॒ ५ ॥ ज्ञेष्वनं॒ द्रव्यै॒ इै॒ कर्ता॑ ॥ जो॒ ज्ञादि॑ मायै॒ चा॑
ति॑ रै॒ कर्ता॑ ॥ स्यै॒ त्यां॒ नै॒ कुवै॒ याज्ञा॑ रात्मा॑ ॥ सहै॒ सा॑ हिनै॒ सै॒ चि॑
निमासु॑ नै॒ नै॒ नै॒ नै॒ ॥ अवै॒ कु॑ तिपास्त्वै॒ कुमार ॥ राधा॑
भै॒ वा॑ हौ॒ इ॒ स्वै॒ ॥ गोकु॑ वा॑ मारै॒ नै॒ नै॒ नै॒ ॥ हृ॒ ६ ॥ नै॒ नै॒ नै॒ जै॒ नै॒
त्यै॒ नै॒ घा॑ ॥ क्षोंगी॑ नै॒ पै॒ नै॒ नै॒ ॥ लज्जै॒ नियां॑ इै॒ नै॒ नै॒ ॥ हृ॒ द्यै॒ नै॒
पिै॒ नै॒ लि॑ ॥ हृ॒ ७ ॥ तोै॒ नै॒ चै॒ नै॒ मै॒ नै॒ नै॒ ॥ ज्ञानै॒ नै॒ नै॒ नै॒ ॥ जालै॒ वै॒ ताच॑
कांै॒ वै॒ डि॒ घै॒ उै॒ नै॒ यां॑ ॥ वाडै॒ यां॑ त्रै॒ वै॒ द्रालै॒ लै॒ वै॒ लै॒ ह्यां॑ ॥ तोै॒ कै॒ पा॑
टै॒ दि॒ घै॒ लै॒ नै॒ सै॑ ॥ हृ॒ ८ ॥ ज्ञानै॒ यामै॒ नै॒ धै॒ नै॒ ॥ द्वै॒ नै॒ उै॒ घै॒ वै॒ गै॒ सै॑
कोै॒ यामै॒ बोलै॒ नै॒ नै॒ ॥ नुजै॒ गो॑ वै॒ ॥ २० ॥ जो॒ कु॑ नै॒ नै॒ नै॒ नै॒



6
च्याक्राक्षा ॥ अयाप्तिज्ञालिनाधा ॥ मगम्हेयश्रीगोविंदा ला
हाण होयसहर् ॥ ७१ ॥ मास्तिलाजनानवीभरतां ॥ सुविवतहोयंसा
युता ॥ तवतोंमायाचक्रपालितां ॥ पांचावनपाचाजाहुला ॥ ७२ ॥
जैनेदें नवोनेतंजावस्परि ॥ नार्थाहर्षिनमायेज्यंवरि ॥ इधिमा
तज्ञायुनक्षत्रकरि ॥ हनस्त्रादेवला ॥ ७३ ॥ क्षमातारामम्हय
हनस्त्राजेवितज्ञाहु ॥ उत्तीष्यायकधराधिन्
ताताउघडिते ॥ ७४ ॥ नार्थाउघडिले ॥ तोनपदेवी
लसंवेळे ॥ जानयोनहनस्त्रानपुढघतले ॥ मुन्खचुंबिलप्री
दिने ॥ ७५ ॥ जानयाम्हयानाधसीपाहि ॥ तुजनगमेंविनिज
टहि ॥ हनस्त्रानसीतुनिद्यायीतज्ञाहे ॥ नवेलवावयामेंदि
रा ॥ ७६ ॥ याचेपाहातांश्रीमुन्ख ॥ अनंतजन्मीचहरुङ्गुःनव ॥

The Raavade
Project
Mashodhan Nardal, Dhule and the
Chhatrapati Shivaji Maharaj
Museum, Mumbai

(काठकमावदाभरणीक) ॥ लक्ष्मा विणजानन् ॥ ७४ ॥ राधा
 इन्द्रतानेत्वं चरय ॥ तुमलिष्टाङ्गान्त्रमाय ॥ सोयनेघनासीन
 तां जगजिवन ॥ कनिकहृष्टमाकाश ॥ ७५ ॥ ये त्वं वहुत दिवस
 लालियावरि ॥ उजरुजउटलिग (कुलभास्त्रारि) ॥ श्री उष्ण
 विरिथान हाताम्हुण ॥ ७६ ॥ यिक महुयातीगाढ़ि नाहु
 लाहु नाथान के न्साहुयां ॥ य गतिवल काय ॥ लक्ष्माना
 टक बहु अप्स्त्वं ॥ ७७ ॥ कोरुहु तीप्तुय ॥ कोन्ही महयति
 लिरुण ॥ यक महयविगुयान्तुय ॥ सांच्छर्गाईनहितकि ॥ ७८ ॥
 हांतियत्तीचबंस महयति ॥ मिमांसक यच्चीलगे कर्मकरिति
 सर्वकन्ताया सिच महयाति ॥ नाईक लययोति ॥ ७९ ॥ संबद्ध वास्त्र
 गर्जत ॥ अस्त्रिपुरुषसागत ॥ तोहान्चश्री उष्णानाथ ॥ गाकुले



आवंतरला ॥८३॥ तनव्यदान्त्रगजीत ॥ व्रह्णतिउरषन्संग
॥ तोहुचश्रीहृष्णानथ ॥ गोकुछांतज्ञावतरला ॥८४॥ प्राक्षे
कान्द्राकृक्षाद्युन ॥ यादियानामन्त्राभासीकरय ॥ तेवदान्त्र
व्यकरण ॥ हनिमुणवयितिसा ॥ योगसाधनपातांजलि
क्षामपावतिवनमालि ॥ रवेहृष्णमध्यपिलि ॥ यादीला
क्षामध्यां ॥८५॥ येजुंवोहृष्णान्त्र ॥ बेपोसनांनपाग
मध्यवय ॥ सीमवेदिकनान् ॥ रत ॥ यादीलागीपावति ॥
८६॥ वैवम्हृष्णतिसहाद्विव ॥ वैष्णवम्हृष्णतीरमाधव ॥ तो
म्हृष्णतीन्त्यंयमेव ॥ लुर्यनानायययययोत्ते ॥८७॥ गयापत्य
उद्यतीगजवहन ॥ तोचीहृष्णाधामन्मोहन ॥ वाह्निभजे
तिशाह्निलानुन ॥ तोचिहृष्णाधामन्मोहन ॥८८॥

Shivade Seshnahan Mandal, Dhule and the Yashwant
Jotirpusthi Samiti, Mumbai
and the Yashwant
Pratishthan Mumbai

कम्हुपतियासिकाळा ॥ कान्हुरुपातज्जाहनावदा ॥ परितो
 कलावणीविगदा ॥ जोंराघेन्वेसविलाडाल्हारा ॥ ८९ ॥ त्रचिनं
 तपकलेबहुत ॥ सप्तजन्मपरियंत ॥ ज्ञागावयाज्ञगवंत ॥ तेचरा
 आस्त्वगोकुक्षिं ॥ ९० ॥ पश्चपुराणिहज्ञातकथा ॥ श्रानीद्रावहुन
 प्रथा ॥ मुखिवेगवीनविदि ॥ कातहतावाढना ॥ ९१ ॥
 अप्पवतीरमया ॥ बोलिल नर ॥ क्लुच्छाभनव्यान ॥ जो
 पडितामाजिचुडामयीन्तु ॥ चरसनकालयुगीं ॥ ९२ ॥
 विल्वमंगवादिककविह ॥ कथितीराधानस्थानन्त्र ॥ तेचव
 यितिश्रीघर ॥ नक्षवीचारदुसरा ॥ ९३ ॥ जान्यानुजुजुजुठले
 एकुलि ॥ रोधाग्टहिथेरुहोतेवनमाची ॥ तेयेशादुनंकर्णकम
 औकिलिजनवारी ॥ ९४ ॥ गौठीगीक्षांगतियशादसि

Rajawade Sayajiroop Manda, Dhule and the
 Joint Project of the
 Sahitya Akademi, Mumbai

रान्धा दिनाधेच्या गटहासि ॥ मातामृहयंत्रषिकेरि ॥ राधा
हासि नवजावे ॥ १५ ॥ तथापि जासी तुरडेन ॥ तरिसिंदुजासि
ह्याकरिने ॥ मगबोल्लै जगडीवन ॥ नवडायं आतास्वर्वधां ॥ १६ ॥
राधेयि संस्कुक्षु नातारि ॥ तिस्येकनागती सुंदरि ॥ तुझे सुनसी उं
आवरि ॥ घनास्य हनि न अणी ने ॥ १७ ॥ रान्दुमृहयं राधपरिय
स्थावरी जनिजरायी नीति ॥ रोसी हसा निश्चयेसी ॥ तुं
यनिधारे ॥ १८ ॥ जासी एक राडि लोडुटि ॥ न कुराध
सी स्त्रै असेटि ॥ फुहा फुहा न डेना दा ॥ मृहय जगडिजांतरला
१९ ॥ नावडं जानु उदक पान ॥ नावडमज्जन आणी सुषय ॥ नाव
ज्जाजन चंदन व्रायन ॥ मोहिलं मन हनिने ॥ २० ॥ नावडक हासि
य अखर० ॥ काढुन ठाकिलं जोकं कार ॥ नावडती सुभन हर ॥

8
Rādhā
Shodhan Veda, Phule Model Vesma
Rao Chavhan
Pratishthan, Mumbai

उद्दारमात्रमती ॥ ५१ ॥ चहाकणासत्वथं ॥ तेवोटपनमतिन
 दृज्ञादवेशोधर ॥ चिंथेऽवाटतसे ॥ ५२ ॥ येंकहिवत्तीकुरंगनवे
 ना ॥ चालीलिसुर्यकन्यच्छाजिवना ॥ चालहंसगतीसुमानना ॥ नदस
 दनवन्नजाय ॥ ५३ ॥ तोतवंठंत्रातःकाल ॥ घारकाढुस्तिकघननिक
 याद्येउनगोपक ॥ घारकाढुरने ॥ ५४ ॥ अरयामरन्यघनत
 नउत्तरांशोंदेनियांतवेति ॥ येहनित ॥ दुसरामन्यान्याव
 यां ॥ ५५ ॥ जेगाईसस्पदगिवीं
 तसीखामयोद्भुट्डुग्ध मरणा
 मरतांचिमुकुंद ॥ तोब्रसानंहकायकरि ॥ ५६ ॥ आपुलियामुरिवघार
 इनस्थावेदितसेंजरभना ॥ तामातम्हयेंसुंदरा ॥ असंकायकनिलासी ॥
 ५७ ॥ हृष्णाम्हयोमरक्षामनणा ॥ आनवडलगंडिचापान्हा ॥ ल्ययो
 निमास्तियानिजवदना ॥ माजिघारकाढितो ॥ ५८ ॥ यराहागलीघरात



पुढं भरयाद्येत्तरीदृष्ट्यानाथ ॥ दाराकेऽजवपाहुत ॥ तवतेयेसाधा
उभिजात्ते ॥ १११ ॥ दनवृनराधेवदृन ॥ तन्मेयजालामहुसुंदृन ॥
विस्तरनीयागाहुण ॥ वृषभानवालं वेसला ॥ ११२ ॥ राधकडं कलं
वदृन ॥ ईकेऽवेदिव्रत्राप्तेववृषण ॥ चुलीलाराधेसीदेवांन ॥
नाहित्मरथकहापि ॥ ११३ ॥ नववदृन चांचाक ॥ दनवानसुलला
उक ॥ दोन्हिनवचक ॥ ११४ ॥ स्नहुकननपाहुति ॥ ११५ ॥
यमहाउजांजांगठी ॥ तो रघु दुहितांचकपाठी ॥ मातभ
यांतेदाणी ॥ कायंकरितांसिगपावा ॥ ११६ ॥ राधकडभासती
त्र ॥ मातेंसदेतव्यतर ॥ म्हुयेंकदितोंगाइचिघार ॥ भनगा
प्यभन्लाकिं ॥ ११७ ॥ माताभृयोबनपाहु ॥ दुहितांसिव्रषभकिं
र ॥ नवेष्टपाहुनिजभकविय ॥ तो वृषभदृवीला ॥ ११८ ॥

The Radwade Banshodh Vandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan
Collection Project No. 1000
Digitized by srujanika@gmail.com

मातस्मिन्हुणंकमवानायेक ॥ दवाचानवस्तुकलिसवहुतक ॥ चे
 पहिथानयेक ॥ ईतक्यामाजिजाहाल ॥ ११६ ॥ माताम्हुणंश्रीहरि
 उज्जमननाहिथिरि ॥ तोद्वानिदनविलिकुरगनेत्री ॥ नाधात्तुंदरी
 तध्वां ॥ ११७ ॥ माताम्हुणंवटवउनसिरि ॥ कावोयैथंउभीदानि
 यरिचालिलिज्जडकरि ॥ द्यमुन निष्ठा पावया ॥ ११८ ॥ गेलीघेउ
 नीयमुनाजिवना ॥ चववावया चाला जगडीवन ॥ नाधंचेंद्रानि
 येउन ॥ मुलेमेछउनउआ(उ) ॥ ११९ ॥ तोराधिकावासरिवरि
 मथनासीजानंसकरि ॥ तोनेत्रीदस्वीलाश्रीहरि ॥ जबंदुवर्णसाजी
 ना ॥ १२० ॥ तिकेडेवधिलंराधानेनयन ॥ विस्तरलीगनसमंथन
 दिलाडेनियातरविचालुन ॥ उसवीषुणनिजच्छह ॥ १२१ ॥ श्रीहरिने
 मोहिलेमन ॥ नाववद्युगहुजासिमान ॥ दतिगंलीमुरोन ॥ ब्रह्मानदस



Chaitanya
 the Radha-Krishna Project

समरसजालीबालुप्रकाशी ॥ नववेचिनीवस्त्रनिसि ॥ लवण्यमिथुतं
ज्ञालास्ति ॥ तेजीपरिज्ञाहली ॥ १२३ ॥ नलागतापतःयापोते ॥ व
तीजाकषिल्यारमानाथं ॥ हृषिदनवतजानदकरितं ॥ अपञ्चलवथा
तंविसरलि ॥ १२४ ॥ तोनवडवडावाजेन्द्रा ॥ सत्तुभालीधंवान
दाना ॥ सक्रोधंवालंतंज्ञावस्त्रा ॥ राधलागीदद्वातं ॥ १२५ ॥ कां
गेमंथिस्तिरिकपत्र ॥ कायनायकाति ॥ लक्ष्मीन ॥ कायंगेलंउझंनव
निर्देउनानवडवडितो ॥ १२६ ॥ इयंकामामीतं ॥ उदाधडकि ॥ १० ॥
फुटकाऊन्ते ॥ नितागुस्तुनपाहातसं ॥ तेगेलकिनतेगेलम्हुयुनि
तां ॥ १२७ ॥ सत्तुम्हुयुतुसमनराहिस्तिर० तादानिउभानामसुदर
म्हुयुतुस्त्रितव्य ॥ नवंजनाहितनिचजोले ॥ १२८ ॥ जदाम्हुयु
स्त्रितव्यासि ॥ कानुदुयेधंउभाजास्त्रिय ॥ येनम्हुयेंजाम्हीनवव्यवीदिस्ति

the Frescoes of Shodhen Mandal, Dhule and the Yashwantinagar Palace, Matheran, Maharashtra, India

तुंकायेद्विलिथेरडं ॥१२९॥ वाकेडंनाइकन्त ॥ वृध्यसीवीचिट्ठिजग
 रीवने ॥ व्रध्याधांवकाधांकन्तने ॥ पक्षमनमोहनतेथुनियां ॥१३०
 घरिनंहासवजेंवीला ॥ तोंहोनीघरहरदिवन्सजाला ॥ उठंघउनिता
 वका ॥ यशोहनिजसपकाहरि ॥१३१॥ म्हेणदस्त्वानवाडिनकरि
 जाउनकोंकुहाबोहरि ॥ उठ उभागनानि ॥ निद्राकरित्वावकास्त्रे
 ॥१३२॥ तिनिकेडंनाधिकासुङ्कु
 म्हुणयाद्वंहा ॥ कधिजातास्त्र
 फुदतउभिनाघासुहरा ॥ म्हेणगुणामुद्राजगहेहारा ॥ प्रायदेह
 नमिंजातां ॥१३३॥ जगन्नायेकाजगजीवना ॥ येमुनाजिवनिदेहन
 प्राया ॥ माझ्यावंधकामनमोहुना ॥ उझ्याचरणाजंतवलो ॥१३४
 औसेंराधेचेंजातांर ॥ जायुनियांकरणकर ॥ हुकुचउवेनमध्यन्



A faint watermark in the center of the page features a portrait of a man with a tilak on his forehead, wearing a crown and a dhoti. The text around the portrait reads 'प्रायदेह नमिं जातां' and 'जगन्नायेकाजगजीवना'.

येमुनातिरापातला ॥ १३६ ॥ तेज़लीरवनिहुपारि ॥ हुजेनसेकोन्ही
येमुनेतिरि ॥ स्वेगयेउनीमुनारि ॥ घनिलिनिनिराधन्ति ॥ १३७ ॥
राधाम्हुणपक्षपाणी ॥ संसारामास्यापडिलपाणी ॥ मास्तनामरुप
बुडविलेंजनी ॥ विपरितकरुणीतुस्तिद्वच्छा ॥ १३८ ॥ उंहिसतों
स्तिकीशोर ॥ उझिकरुणीगरनाहुमीधार ॥ विपरितउझेचरि
त्र ॥ ब्रह्मादिकाक्षेना ॥ १३९ ॥ गीज़लीनंद्राणी ॥ उठेनही
सेकेवल्याहानि ॥ म्हुयकाठगरनी ॥ कलिधेउनेयैलजां
ता ॥ १४० ॥ श्रीदृष्ट्याचिंमोगलगलिमागकाढित ॥ मताचाली
लिशोंघित ॥ जेसावदस्तीनिर्विणिपथं ॥ सुहमवाधूनका
ढित ॥ १४१ ॥ येमुनतिरिअलीयेशोंदा ॥ तोउकीदृष्ट्याआणी
राधा ॥ राधाम्हुणसच्चिद्वानंद ॥ बालीमायेउज्जिपे ॥ १४२ ॥

The Rajawade Sevashodhan Mandal, Dhule Project, Munshi Chaitanya Prakashan, Mumbai, India

साडुनियाविश्वेमहा ॥ निजेवेवापवलि ॥ १५६ ॥ राधाकेवकनिज
जकी ॥ तीसवन्द्यजालाजगमति ॥ अनंतजन्मोवेतपनिष्ठिती
येकद्वाचिकवाभोलं ॥ १५७ ॥ हृष्ट्रचिह्नद्वयेणि ॥ इणिष्ठुजा
सीकास्तिलामनी ॥ सप्तजन्मतपकरने ॥ चक्रपाठीपवलीहृष्ट ॥ १५८
इकडेंमाताम्हेण्टुरारि ॥ जुबोहरि ॥ चोरिचहिष्टाळु
जवारि ॥ घेतीस्तुदरिगालंठि ॥ १५९ ॥ गोछिणीसम्हेण्टेशा
दा ॥ चोरिकरिताम्हेयोतागोलि ॥ तनिसनुगावनिसुकुदा ॥ घरन
येकद्वाभाणागं ॥ १६० ॥ छष्ट्यास्तधरावयोगोक्तियि ॥ जपतहासा
दिवसरजनि ॥ तवयकीलागीचक्रपाठि ॥ गोरसभाहितासपउ
लं ॥ १६१ ॥ येकलाचिनियालाघरातं ॥ दधिभाजनपरनकोडित
सुनवेकरनयादधिभाष्टित ॥ वेकुटनाधनिजलिलं ॥ १६२ ॥

Join us at www.santinikananmandir.org
Santiniketan Mandir, Dhule, Satara, Yavatmal, Nashik, Mumbai

12
। दधिचर्चितवदन ॥ दिसेंपरमद्रोंमायमान ॥ तोंजाकस्मात्
गौचिपियेउन ॥ करिधरिलंहरिसि ॥ १६३ ॥ चालेन्दुज्जं
मातेपासि ॥ म्हणउनवेठुनभारीला विदिसि ॥ संगतसम्
स्तागौचिगिसि ॥ योगंराषिकरीसापडला ॥ १६४ ॥ जजग
क्षिणियेसदनातुन ॥ तीरेह तेवेन यक्षलक्ष्मा ॥ लक्ष्मानुलक्ष्म
स्वनपंदुर्णी ॥ येकसारिनविच्छुके ॥ १६५ ॥ पंचवषिसावक
यामुति ॥ येकसारिनविच्छुके वाने ॥ दधिमुखीमात्रवलंनी
श्चिति ॥ वेंदुनेतीमायपासि ॥ १६६ ॥ येकादंभालयास्तं
गवया ॥ तांतिचंकडेवरिअहेकाहया ॥ तटस्तहाउनिया
माया ॥ चहुकडेवीलाकि ॥ १६७ ॥ जिकडेतिकडेन्द्रष्ट्वा
आसंदव्यातनपंदिषुर्णी ॥ बृंवयासिक्तन ॥ वावकाटभासन ॥ १६८

the Bhawade Gondhedi Mandal, Dhule and the relevant
Poem Number

मात्रपुढ़यशोदापहात ॥ तोज्ञावचाव्यापलाजगन्नाथ ॥ तेंव्र
स्मानंदसदोदित ॥ नाहिंभातस्यत्तपासी ॥ १६५ ॥ मायापाहुंच
रातभातवाहुरि ॥ पाळेष्यातज्ञागिवस्यनिवरि जावध
द्वच्छानिर्धारि ॥ मायादविपाहानसं ॥ १७० ॥ देवापान्नियेक
बेसलाभासं ॥ ऊळहुराकरवर्तवदाहोसं ॥ येकतेंपाळ
ष्यातरडतसं ॥ क्तानदइम्ह यां ॥ १७१ ॥ येकद्वच्छाघरा
तजेवीतसं ॥ यकञ्चांगभीरुक्त ॥ येकस्तनपान्नकरि
तसं ॥ मानपुटनिचोनियो ॥ १७२ ॥ येकञ्चांगणीगडबडाल
क्त ॥ येकञ्चांगवरिधुचिघालित ॥ येकपाहुरिधननवाठि
त ॥ मातलागीतक्त्वले ॥ १७३ ॥ यशादास्यमाधिस्तन्वानदु ॥ ब्र
हुडभरलंजासंगावीदु ॥ विस्तकाहलं ब्रह्मानदे ॥ नदिस्तुजस्तवथा ॥ १७४

माया ज्ञानवालिघालिदृष्टि ॥ ज्ञानकृतपदिस्तेष्टृष्टि ॥ ज्ञावधा
विश्वं प्रसरजग्जेति ॥ दुजनिणयेकला ॥ १७५ ॥ सकलगात्रिणी
तन्मयजालीया ॥ रावनाहिंगाहुणवावया ॥ गेल्यादहनवी
सत्तनिया ॥ नदिसमायावोडवर ॥ १७६ ॥ ज्ञावधाअनलाह
नियक ॥ वेदाचेंहिमाळवलेतर्क ॥ सत्रभावावलिदृव ॥
सहस्रमुखलाडिला ॥ १७७ ॥ नवं ॥ नरितागवेंगाहाणं ॥ सवि
हिव्यापिलेंनानरायेण ॥ नहिलं विवोल्याणं ॥ हष्टीचेपाहुयां ॥ १७८ ॥
विवलें ॥ १७९ ॥ येकिकेडंयकगायिपाहुती ॥ तवयाज्ञावधा
चक्षुशुभुति ॥ नहिन्वियापुरपवेकी ॥ त्रीजगतीहेनिरुप ॥
॥ १८० ॥ नदिस्तीलोंकगुकुंठ ॥ ज्ञावधायेकवातलावननिल
पुण्ड्रब्रह्मानंदनिर्मित ॥ ज्ञावधायादकज्ञावयेण ॥ १८० ॥

Digitized by
Rishabhdev Relewaade, Son of Indian Scholar, Dr. Dule and the Yashwantrao Chavhan
Digitized by
Prakhar, Mumukshu, Mumbai



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com